मनुष्य बनो

संरक्षक

दयाल फकीर चन्दजी महाराज

मानवता मन्दिर होशियारपुर (पंजाब)

'मनुष्य बनो' के नियम

१—शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिकता के नियमों का वास्तविक दृष्टि कोण से प्रचार करना और प्रेम, सभ्यता, आदर, शिष्टाचार, सदाच सहनशीलता और संयम की शिक्षा देना इसका मुख्य उद्देश्य है। मन बनना और बनाना।

२—सन्त महात्माओं और ऋषियों की वाणी को सरल, सुबोध और सा रण भाषा में प्रचार करना।

३—सामाजिक उन्नति कारक तथा देशहित कारक लेखों को भी स्थ दिया जायगा।

४—किसी धर्म, पंथ या सम्प्रदाय के खण्डन सम्बन्धी लेख नहीं छापे जायेंगे

५—यह पत्र प्रत्येक मास की १५ तारीख को प्रकाशित हुआ करेगा।

६—लेखों के घटाने बढ़ाने और छापने न छापने का अधिकार सम्पादक का होगा। लेख सम्पादक के नाम भेजे जॉय।

७—ग्राहकों को पत्र लिखते समय ग्राहक नम्बर व पता साफ साफ अवश्य लिखना चाहिये। उत्तर के लिये जबावी कार्ड आना चाहिये वी० पी० पी० से पत्रिका नहीं भेजी जायगी। इसका वार्षिक मूल्य ८—०० है।

८—यदि किसी मास का पत्र ठीक समय पर न पहुँचे तो पहले अपने यहां डाकखाने से पूछताछ करके वहां से जो उत्तर मिले व अगला अङ्क निकलने से एक सप्ताह पूर्व तक कार्यालय में पहुंचने पर ही दूसरी प्रति बिना मूल्य भेजी जा सकेगी।

९—प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र. ग्राहक होने की सूचना, मनीआर्डर आदि मैनेजर के नाम से भेजने चाहिये। मनीआर्डर कूपन पर अपना पता साफ साफ लिखना चाहिये। और पते की तबदीली भी।

R. S.

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्ण मदुच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवावशिष्यते ।।

❋ मनुष्य बनो ❋

वर्ष ३२ | संसर्प कार्तिक संवत २०३९ वि० | सं० १२

शब्द

दुर्गादास 'चमन'

बिन गुरु ज्ञान काम नहीं होवे ।

१—अपने मन से, अपने बल से करले खूब कमाई ।
बिना दया और मेहर भाव के सबने मुँह की खाई ।।
बिन सतगुरु के क्यों बाबरे हीरा जन्म यह खोवे ।
बिनु गुरु ज्ञान काम नहीं होवे ।।

२—ज्ञानी ध्यानी अहंकार में आकर चक्कर खावें ।
ज्ञान ध्यान सब धरा रहेगा नर्क में गिरकर जावे ।।
घूम २ कर दुनिया अन्दर क्यों बावरे रोवे ।
बिन गुरु ज्ञान काम न होवे ।।

३—अहंकार में आकर देखो बन गये कई अखाड़े ।
लाखों व्यक्ति मन में रहकर फिर रहे मारे मारे ।।
कई जन्मों से क्यों बाबरे लम्बी चादर सोए ।
बिन गुरु ज्ञान काम नहीं होवे ।।

४—धन और मान से गुरु बचाए शिष्य को अंग लगाए ।
दया भाव उमड़े हृदय में तन की पीड़ मिटाए ।।
सतगुरु के तू चरण पकड़ ले जो होना सो होए ।
बिन गुरु ज्ञान विवेक नहीं होवे ।।

धन्यवाद

१—श्री मोटूमल जी, गंगानगर (राजस्थान) ने अपनी भतीजी रजनीदेवी के जन्मोपलक्ष पर 'मनुष्य बनो' की सहायतार्थ १०) रुपये भेजे हैं। मालिक से कामना है कि वह रजनीदेवी को चिरआयु एवं सदा प्रसन्न रखे। आप समय २ पर पत्रिका की कुछ न कुछ सहायता कर हमें प्रोत्साहित करते रहते हैं। मालिक से कामना है कि उन्हें सदा ऐश्वर्यवान बनाये रखे।

२—वामनराव लहनुसा जसवन्ते, अमरावती ने पत्रिका की सहायतार्थ ५०) रुपये भेजे हैं। मालिक से हम उनकी हर क्षेत्र में सफलताओं की कामना करते हैं।

३—श्री रामकुमार उपाध्याय, गाँव अमीन करनाल ने पत्रिका की सहायतार्थ २१) रुपये भेजे हैं। हम मालिक से उनकी दीर्घायु एवं उच्च जीवन हेतु कामना करते हैं।

४—श्री शीतलाशंकर मिश्रा, दौलतपुर निवासी रायबरेली ने पुत्र के जन्म पर पत्रिका की सहायतार्थ ११) भेजे हैं। मालिक से कामना है कि वह नवजात शिशु को सुखी सम्पन्न व दीर्घायु बनाये।

५—श्रीमती भागवती सनेजा, गोविन्दपुरी, मोदीनगर ने पत्रिका की सहायतार्थ ११) रुपये भेजे हैं। मालिक से हम उनकी मनोकामनाओं की पूर्ति की कामना करते हैं।

६—श्री कृष्ण कुमार गुप्ता, पानीपत ने पत्रिका को ११) रुपये सहायतार्थ भेजे हैं। मालिक से कामना है कि वह उन्हें सफलता के हर कदम पर अग्रसित करे।

७—श्री हीरानन्द जी ने अपनी पत्नी के निधन पर पत्रिका के लिये (हजूर आनन्द राव जी महाराज, सिकन्द्राबाद के मार्फत) १००) रुपये अनुदान स्वरूप भेजा है। मालिक से कामना है कि वह

श्री हीरानन्द जी को पत्नी की आत्मा को शान्ति प्रदान करे एवं शोक संतप्त परिवार को इस अपार कष्ट को सहने की शक्ति प्रदान करे।

—सम्पादक

फकीर चमन पत्रावली

होशियारपुर
२६-९-७२

(१) प्यारे दुर्गादास,

राधास्वामी !

तुम्हारा पत्र मिला ! जब तक जीवन है कर्म से छुटकारा नहीं। सतगुरू तेरी अपनी ज़ात है वह तुझसे जुदा नहीं। मगर यहाँ ठहरना कोई आसान काम नहीं अतः प्रेम और भक्ति का मार्ग जीवन में अपनाओ। समय पर सुमिरण से सहारा लो, कभी ध्यान से सहारा लो, कभी प्रकाश का सहारा और कभी शब्द का सहारा लो। सबसे बड़ा विश्वास का सहारा है।

—आपका फकीर
होशियारपुर
१६-१०-७२

(२) प्यारे चमन जी,

राधास्वामी

यदि आप ऐसे शान्त रह सकते हैं तो रहने की कोशिश कीजिए। मेरा अनुभव तो यह कहता है कि जब तक जीवन है कोई मनुष्य एक अवस्था में सदैव नहीं रह सकता। इसलिए जिस अवस्था में हो उस अवस्था में रहकर शान्ति या सम अवस्था में रहने की कोशिश करना ही सहज समाध है। आपका अपना जाति अनुभव या तजुर्बा आपका अधिक सहायक होगा।

आपका फकीर

(शेष पेज ९ पर)

एक पत्र

परमतत्व फकीरमय महाराज जी,

चरण-कमलों में नमन !

'अवंतिका' में आप पधारे, पावन दर्शनों एवं सत्संगों से कृतार्थ हुआ। आज पालसा० से ज्ञात हुआ कि तारीख ३० को आप पुनः अमेरिका पधार जायेंगे। अस्तु, मेरे प्रश्नों का समाधान क्रमशः कर पधारें तो बड़ी कृपा होगी (१) शास्त्रों(सनातन) में वर्णनात्मक नामों का बड़ा महत्व है कि अन्त समय में सुख हो। नाम भी ले तो मोक्ष हो जाती है। जैसे अजामिल आदि किन्तु संतमत में केवल 'धुनात्मक नाम' ही सच्चा है ? जिसका (प्रकाश/शब्द) अनुभव मुझे अभी तक भी नहीं हुआ। क्या मैं अधिकारी नहीं ? कृपया साधन बतावें।

(२) "आत्मा अमर है" जिन्होंने चोला छोड़ दिया है; उनसे सम्पर्क कैसे साधें ? साक्षात्कार की उत्कंठ इच्छा रहती है। ऐसी आत्माओं से प्रेम भलाई हेतु कौन से कर्म किये जावें ?

(३) 'फकीर बाबा' की हार्दिक इच्छा थी कि मृत्यु के बाद मेरा क्या अंजाम रहेगा ? संसार वालों को आकर बता जाऊँगा। वो जीते जी मुक्तावस्था में थे। साधना के उच्चतर स्तर पर चोला छोड़ा। 'परम तत्व' स्वमेव ही थे और हैं। फिर ये संभव क्यों नहीं हुआ ??? कृपया पूर्ण विश्लेषण कर समझावें।

पूर्ण विश्वास है—मेरी जिज्ञासा हेतु धृष्टता को क्षमा कर, संतोष समाधान प्रद उत्तर अति शीघ्र प्रदान करने की कृपा करेंगे। आपके शुभाशीर्वादों (अखंड) की कामना सहित प्रत्युत्तर की उत्कट प्रतीक्षा में—

आपका ही अकिंचन

चन्द्र कुमार हावा

फ्रीगंज, उज्जैन

मानव दयाल का चन्द्रकुमार, उज्जैन के पत्र का उत्तर

मानव दयाल जी महाराज

मेरे प्यारे चन्द्र कुमार जी,
राधास्वामी । परमदयाल जी सहाई ।

आपका २५ जुलाई का पत्र मिला। पत्र देर से इसलिये मिला कि मैं डेढ़ महीने के लिए विदेश दौरे पर गया था। आपका पत्र मेरे जाने के बाद पहुँचा। मुझे अच्छी तरह याद है कि आप से उज्जैन में बात-चीत हुई थी। आपके प्रश्नों का उत्तर मैं इस प्रकार दे रहा हूँ।

(१) मुझे वह मालूम नहीं कि आप कौन से शास्त्रों का हवाला दे रहे हैं। विष्णु सहस्रनाम का जाप सनातन धर्म में बहुत प्रचलित है उसमें वर्णनात्मक और धुनात्मक दोनों प्रकार के हैं। सहस्रनाम के केवल पाठ मात्र से मुक्ति नहीं हो सकती हाँ, अच्छा जन्म मिल सकता है। ऐसे नाम के पाठों का फल तब मिल सकता है जब उन नामों का पूरा अर्थ मालूम हो। हाँ, उसका बड़ी लगन से जाप करने हेतु भाव समाधि तो लग सकती है। यदि इस समाधि से प्रकाश दिखाई देने लगे तो मनुष्य धीरे २ आन्तरिक अनुभव करता हुआ सतलोक तक पहुँच सकता है। सनातन धर्म में मुक्ति के साधनों का सारांश भगवद्गीता में है। सन्तमत भगवद्गीता का पूर्ण समर्थन करता है। भगवद्गीता के अनुसार मनुष्य शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का समन्वय है। यहाँ पर बुद्धि का अर्थ जीवात्मा अथवा

कारण शरीर ही मानना चाहिए और आत्मा का अर्थ विशुद्ध आत्मा एवं सुरत समझना चाहिए। जिस मनुष्य की प्रकृति में शरीर एवं भौतिक तत्व की प्रधानता है वह निष्काम कर्म मार्ग से ही मुक्ति प्राप्त कर सकता है। जिस व्यक्ति में मानसिक तत्व एवं भावनाओं की प्रधानता है उसके लिए भक्ति मार्ग श्रेयस्कर होगा। इसी प्रकार जिस मनुष्य में भौतिक जिज्ञासा अधिक है उसे ज्ञान मार्ग से ही चलना चाहिए। जिस मनुष्य में परम तत्व को ही प्राप्त करने की ऐसी तीव्र इच्छा हो उसमें स्वाभाविक रूप से वैराग्य का आधिक्य हो तो उसे बुद्धियोग जिसे समत्व योग भी कहा गया है अपनाना चाहिए। यही बुद्धियोग वास्तव में सुरत शब्द योग है। सुरत शब्द योग बुद्धियोग का सरल से सरल रूप है इसलिए उसे कोई भी व्यक्ति चाहे वह कर्मवादी हो, ज्ञानवादी हो या भक्ति मार्गीय हो अपना सकता है। दूसरे शब्दों में भगवद्गीता का बुद्धियोग अथवा सन्तमत का सुरत शब्द योग सब प्रकार की प्रकृति वाले लोगों के लिये ग्राह्य है। उपनिषदों में भी 'ओम्कार' साहंग आदि धुनात्मक शब्दों की महिमा है। हर एक मन्त्र के साथ ओम् को जोड़ा जाता है। भगवद्गीता में 'ओम् तत् सत्' धुनात्मक शब्द सन्तमत का ठेका नहीं है और न ही सुरत शब्द योग सन्तों का आविष्कार है। सन्तों ने सत्त सनातन धर्म के मार्ग को खासकर उस योग को सरल रूप में प्रस्तुत करके जनसाधारण तक पहुँचाने की कोशिश की है जो अभी तक गिने चुने व्यक्तियों तक सीमित था। ऐसा करने में सन्तमत के कुछ सम्प्रदायों ने प्रत्येक व्यक्ति के भिन्न स्वभाव की ओर ध्यान न देकर सभी लोगों को एक ही विधि बताकर जिज्ञासुओं को हानि भी पहुंचाई है। परमदयाल जी महाराज ने सच्चाई पर चलकर गृहस्थियों के लिए सरल मार्ग पर चलने का आदेश दिया है। जब आप मुझसे दोबारा मिलें तो मैं आपको धुनात्मक शब्द विधि के द्वारा साधन विस्तार पूर्वक बता सकता हूँ। आपका व्यक्तिगत

उपस्थित होना जरूरी है।

(२) 'आत्मा अमर है'। यहाँ पर आत्मा शब्द का अर्थ समझना जरूरी है। शरीर जिसे अन्नमय कोश कहते हैं आत्मा के प्राणमय, विज्ञानमय इत्यादि कोशो का ढकना मात्र है। इस ढकने के टूट जाने पर प्राणमय कोश जो कि इस शरीर का सूक्ष्म रूप होता है काफी समय तक बन्द रहता है। शरीर को छोड़ने पर आत्मा मनोमय कोश को बनाये रखती है लेकिन ये सूक्ष्म शरीर सूक्ष्म जगत में मौजूद रहता है। मनोमय कोश में आत्मा और भी अधिक सूक्ष्म जगत में बिचरती है यहाँ तक तो उन्हीं संस्कारों के अनुसार स्वर्ग नर्क आदि का अनुभव करती है जो उसे भौतिक जगत में मिले होते हैं। यहाँ से या तो वह आत्मा पुनर्जन्म लेती है या विज्ञानमय कोश में पहुँचकर प्रकाश का अनुभव करते हुए आनन्द का अनुभव करती है। यहाँ से उसका पुनर्जन्म भी हो सकता है या वह ऊपर की तरफ जाकर अपने कारण शरीर को त्याग कर दयाल देश में प्रवेश कर जाती है तथा वहाँ से ही अलख, अगम, अनामी अवस्थाओं को प्राप्त कर सकती है। आप समाधि ध्यान के द्वारा अपने बिछुड़े हुए मित्रों से सम्पर्क कर सकते हैं। वह सम्पर्क सभी स्तरों पर हो सकते हैं। जो आत्माएँ नीचे के स्तरों वाली हैं उनकी भलाई के लिए यज्ञ श्राद्ध इत्यादि लाभदायक हैं। परमतत्व आधार फकीर जैसी आत्माओं का सम्पर्क ध्यान समाधि के द्वारा प्रकाश के रूप में सुगमता से हो सकता है इसके साथ ही साथ जिसमें भावुकता की प्रधानता है वह फकीर बाबा के कारण तथा सूक्ष्म शरीर से ठीक वही अनुभव कर सकता है जो उनके चोला छोड़ने से पहले किये जाते थे।

(३) फकीर बाबा की हार्दिक इच्छा कि वह मृत्यु के बाद भी अपना अन्जाम बता सकें पूरी तो अवश्य हुई है किन्तु उन्होंने जान-बूझकर स्थूल रूप से इस बात का परिचय नहीं दिया। पहली बात

तो यह है कि पिट्सवर्ग अस्पताल में आपरेशन से पहले परमदयाल जी महाराज शब्द और प्रकाश से परे उस परम तत्व में साढ़े तीन घन्टे ठहरे जिसमें वह आयु पर्यन्त सिर्फ एक या दो मिनट तक ही ठहर सकते थे। इस ठहराव के बाद वह नीचे उतरे तथा उन्होंने अपने आखिरी सतसंग में जो मेरे पास **Recorded** है। यह बयान किया है कि वह अवस्था वास्तव में है और उसमें रह कर भी वह वापिस शरीर में आ सके। उन्होंने यह अवश्य कहा था कि मैं इस अवस्था को बयान नहीं करना चाहता। परम दयाल जी निस्संदेह शरीर (देह) में साक्षात परमतत्व थे और अब भी मौजूद हैं जब मैं यह कहता हूँ कि वह अब भी मौजूद हैं। इसका मतलब यह नहीं कि वह शरीरधारी हैं। परमतत्व होने के नाते वह स्वयं सिन्धु हैं लेकिन अब भी ब्रह्माण्ड की बिन्दु में मौजूद हैं और उनसे व्यक्तिगत सम्पर्क हो सकता है तथा होता है। इस सम्बन्ध में मैं आपको विस्तार पूर्वक फिर बता सकता हूँ। मुझे आशा है कि उपरलिखित बातों से आपकी जिज्ञासा भी सन्तुष्टि हो जायेगी।

आपका फकीरमय
मानव

——०——

होशियार पुर
२३-१०-७२

(३) प्यारे चमन—राधास्वामी

पत्र मिला। मुझे पूरी सेहत नहीं है। अभी कष्ट है। बड़ी खुशी से सत्संग जारी करो। मेरा अशीर्वाद रहेगा।

आपका फकीर
होशियारपुर
३०-७-८२

दुर्गा दास जी राधास्वामी

पत्र मिला। सिर व चेहरा ढ़ांपने का अर्थ है कि मक्खी मच्छर व धूल आदि से अभ्यास के समय बचाव रहे और किसी और पर दृष्टि न पडे और न ही कोई दूसरा देखे ताकि अपना ध्यान बना रहे

आपका फकीर

शब्द

लहर जो उठी समुद्र में, बुन्द पड़ा अति दूर।
बिलपे तड़पे रात दिन, यह वियोग दुख मूर ॥ १ ॥
देख दशा तब बुन्द की, छोभा सिंध अपार।
लहरी आई दया की, बुन्दहि लिया संभार ॥ २ ॥
बुन्द सिंध की एक गति, लख पावे कोई साध।
जब लख पावे मर्म यह, छूटे सकल उपाध ॥ ३ ॥
पंडित तो पोथी पढ़े, मन में बड़ा हंकार।
पाँडे तीरथ में खपे, दान दक्षिणा लार ॥ ४ ॥
भेख सती का भेष धर, घर घर माँगी भीख ॥ ५ ॥
ज्ञानी ग्रन्थन में बंधे, नहीं कुछ जाना भेद।
बक बक निस दिन खो गये, हटा न संशय खेद ॥ ६ ॥
माया ब्रह्म समान दोऊ, दोउ द्वन्द अज्ञान।
द्वन्द बास जब मन बसे, केहि बिधि सूझे ज्ञान ॥ ७ ॥

॥ श्रद्धांजली ॥

तिथि २९-९-८२ को मानवता मन्दिर होशियारपुर में हजूर परम दयाल फकीर चन्द जी महाराज को पहली ओर आखिरी श्रद्धांजली भेंट करने के लिये कई सन्तजन, महात्मा और महापुरुष इकट्ठे हुए। अपने अपने विचार के अनुसार श्रद्धांजली भेंट की। जो श्रद्धांजली श्री मुन्शीराम भगत जी ने भेंट की उस की नकल निम्न-लिखित है।

"राधास्वामी ! आप सब सत्संगी जन बड़ी बड़ी दूर से हजूर परम दयाल बाबा फकीर चन्द जी महाराज को श्रद्धांजली भेंट करने के लिये आए हैं। क्यों कि आप अपनी अपनी श्रद्धा ओर विश्-वास के अनुसार अपने अन्दर शुभ भावना धारण करके आए हैं इस लिये मैं आप सब को हाथजोड़ कर नमस्कार करता हूँ।

अब आप एक ऐसे दास जिस ने हजूर परम दयाल जी महाराज की १८ साल भक्ति की है उस की तरफ से भेंट की गई श्रद्धांजली सुने। इस लिये कृपा करके होशियार, चैतन्य होकर और बड़े ध्यान से सुने। मन के आलस्य और शरीर के ढ़ीले पन को छोड़ दें। मुझे प्रेसीडेन्ट साहिब मानवता मन्दिर होशियारपुर की ओर से पत्र गया कि २९-९-८२ को हजूर परम दयाल जी महाराज को पहली ओर आखिरी श्रद्धांजली भेंट की जायगी। यह पढ़ते ही मेरी जिन्दगी और हस्ती जिन जिन चीजों से बनी है उन के कण हजूर परम दयाल जी महाराजी के चरण कमलों में न्योछावर होना चाहते थे। मेरी ओर से यह श्रद्धांजली काफी थी मुझे वास्तव में यहाँ आने की आवश्यकता नहीं थी। किन्तु मनुष्य एक दूसरे से ताल मेल, विचारों का आदान-प्रदान एक दूसरे की मान प्रतिष्ठा जरूरी है, इस लिये मैं आप सब की श्रद्धांजलीयों की भेंट में शामिल होने के लिये आया हूं।

मैं हजूर परम दयाल जी महाराज की संगत में १८ साल रहा यह मेरे वस की बात नहीं थी। जो हुआ मौज मालिक से हुआ मैं देखा करता था कि उनके पास कई तरह के विचार और आशाएँ लेकर लोग आते थे। एक तो वो सज्जन आते थे जो कि संसारिक आशाओं अर्थात धन-दौलत, सन्तान या मान बढ़ाई के लिये या संसारिक दुःखो को दूर करने के लिये आया करते थे। हजूर परम दयाल जी महाराज ऐसों से प्रश्न किया करते थे कि आप मेरे पास मुझे क्या समझ के आये हैं? लोग जबाव देते थे कि हम आप को जानी जान और सब कुछ देने वाले समझते हैं हमारी इच्छा पूर्ण करें। तो हजूर उनको शुभ भावना, तसल्ली और इच्छाओं को पूरा करने का ढ़ंग बता दिया करते थे। जिन जिन लोगों को उनसे लाभ हुआ वो उनके जन्म और मरण दिन मनाने, भण्डारे करने और अभी अपने शरीर द्वारा कृतज्ञ होकर श्रद्धांजली भेंट करने के लिये विवश हैं।

दूसरी प्रकार के वो सज्जन हजूर के पास आते थे जिन्हें हजूर पूछते थे कि भाई क्यों आए हो तो वप उत्तर देते थे कि हम आप का सत्संग करने दर्शन करने और वचन सुनने के लिये आए हैं, ऐसे लोगों के दिलों दिमाग में हजूर परम दयाल जी महाराज अपने वचनों से रोशनी डालते थे। यह एक किस्म का बीज बोना है जो कि कभी खाली नहीं जाता। स्वामी जी महाराज का शब्द है:-

सन्त डारया बीज, जीव के घट माहीं
को समरथ जो जार सके इस बीज को

ओर वो डाला हुआ बीज एक दिन जरूर फल लाएगा। इसी लिए हजूर परम दयाल जी महाराज फरमाया करते थे कि मैं रंडियाँ छोड़ के नहीं जाऊँगा। इस प्रकार के लोग हजूर परम दयाल जी महाराज के विचारों का प्रचार करने, उनकी पुस्यके पढ़ने और दूसरों को सुनाने के लिये मजबूर हैं। यह उनकी ओर से श्रद्धाजली

होती है। श्रद्धाँजली एक मन का ख्याल हैं जो कि एहसान मंदी के जजबे में आकर किसी महापुरुष को पूज्य देव समझ कर उसके गुणों का गान करते हैं।

तीसरी किस्म के वो लोग आया करते थे जो इस दुनिया में दुखों सुखों से भयभीत थे। सच्चे दिल से इस जन्म मरण या आवा-गमन से छुटकारा चाहते थे। ऐसे लोगों का आना निराले ढंग का हुआ करता था। दूर नल के के पास जूता उतार देते थे। मस्ती में झूमते थे। महाराज जी के चरणों में प्रसाद भेंट करते- दण्डवत प्रणाम करते गोया दुनियां के तीनों तापों से सताए हुये शरणागत हों। महाराज जी के पूछने पर ऐसे जीव कहा करते थे कि हजूर दया कर के अपनी चरन शरण बख्शो और हमें कुछ नहीं चाहिये ऐसे जीवों पर हजूर परम दयाल जी महाराज अपनी दया की वर्षा किया करते थे और बतौर सन्त सत्गुरू का काम करते थे सत्गुरु बनते नहीं थे बल्कि सत्गुरु का काम करते थे। ऐसे लोगों के लिये सत्गुरू न जन्मता है न मरता है। वो क्या श्रद्धाँजली भेंट करें। दाता दयाल महर्षि शिवब्रत लाल जी की जबानी सुनिये।

सत्य नाम का दान दिया है।
गुरू को क्या मैं भेंट करुँ ।।

सतगुरु से क्या मिलता है ? सत्य नाम मुझे पता नहीं कि सन्तों का सतनाम क्या है। मैंने जो हजूर परम दयाल जी महाराज की दया से समझा वो बता सकता हूँ। सतनाम हमारा ही सत्य स्वरुप है। हम सब जीवों का हस्ती में आ जाना और सतगुरु की दया से उस हालत का ज्ञान हो जाना कि मेरी हस्ती क्या है मेरा असली नाम क्या है इस बात का ज्ञान हो जाना सतनाम का मिल जाना है और सतनाम हम सब का असली रूप है। जिस को अपने रूप का ज्ञान हो गया उसके लिये श्रद्धाँजली भेट करना एक अजीब सवाल पैदा हो जाता है।

तन मन धन सब तुच्छ है दाता।
अर्पन क्या फिर वस्तु करूँ ॥

इसके लिये तन मन धन की भेंट नाचीज हो जाती है। सतनाम हासिल कर लेने के बदले में तन मन और धन की भेट कोई महत्व नहीं रखती।

'आपा मेरा सब से प्यारा।
आये को चरनन में लो॥

वह मनुष्य एहसान के जजबे में अपना सबसे प्यारा जो अपना आप है अर्थात जो उस की हस्ती बनी हुई है उस को भी अपने सतगुरु के चरनों में भेंट कर के अपनी अलग हस्ती को भी मिटा देना चाहता है।

'आपा गया गया फिर सब कुछ।
हुआ तुम्हारा आपा खो॥

जब हस्ती खत्म हो जाती है तो जो एक चेतनता का बुलबुला बना होता है वो अपने भण्डार में मिल जाता है। अलग हस्ती खत्म हो जाती है। अपने भण्डार में हमेशा के लिये समा जाता हैं। इस किस्म की श्रद्धाँजली भेंट करना तन, मन और आत्मा से नहीं किन्तु अपनी सुरत से की जाती है। इस को श्रद्धांजली कहना भी उचित नहीं हैं।

राधास्वामी लगन लगी है।
जित देखूँ हो रूप तेरा॥

ऐसे मनुष्य की सुरत हर समय अपने सतगुरु स्वरूप अर्थात बाहर के सतगुरु की दया और उसके काम की तरफ खिची रहती है उसे और कुछ नहीं सूझता।

यह तीन प्रकार की भेंट हर एक व्यक्ति जो जो लाभ हजूर परम दयाल जी महाराज से उठाया वह भेंट करने के लिये मजबूर हैं। मैं इन सब की इज्जत और मान करता हूँ। किस को बुरा और

को भतार्कहें यह आम तौर पर श्रद्धांजली की भेंट करने का मतलब ब्यान किया है। अब क्यों कि आज हजूर परम दयाल जो महाराज की पहली और अन्तिम श्रद्धाँजली मनाई जा रही है, इसलिये उस परम तत्व आधार ने परम दयाल फकीर के चोले में आकर संसार के जीवों पर क्या एहसान किया वो ब्यान करता हूँ।

परम दयाल फकीर की महिमा,
अद्भुत अपरंपारा है।
जीव उस को कैसे गाय
बंधन में पड़ा बेचारा है ।।

जीव उसको नहीं गा सकता, नहीं गा सकता, नहीं गा सकता क्यों कि जीव बेचारा बन्धन में पड़ा हुआ है। वो बन्धन क्या हैं ? ये जो हमारे सगे संबंधियों के साथ माता पिता, लड़की-लड़का, स्त्री पुरुष ये अपना अपना कर्तव्य पालन करने से आदमी इन में नहीं फंसता। वास्तविक बंधन जिन में यह बेचारा जीव फंसा हुआ है वह हमारे कई प्रकार के बोध-भान कई शारीरिक, कई मानसिक कई आत्मिक और कई इस से परे भी झीने बंधन हैं। इस लिये वो परम दयाल जी महाराज जी की खुद मालिक कुल थे उन की महिमा नहीं गा सकते। हम फंसे हुये हैं हम सतगुरु की महिमा नहीं जान सकते।

'मालिके कुल आप थे वे, जो सब का आधारा है।
पांच तत्व की देह में आकर जीव का किया उभारा है ।।

वो मालिके कुल थे, सर्वाधार थे। इस पांच तत्व की देह में आकर उन्होंने जीव का उभार किया है। जीव का उभार कैसे हो सकता है। गुरू ग्रन्थ साहिब का एक शब्द है।

"सत्पुरुष जिस विवेकथा, सतगुर तिस का नाम
तिस के संग सिख उभरे, नानक हरि गुन गाम

सिख तब उभर सकता है जब सतगुरु को वो श्रद्धांजली भेंट

करता है और सतगुरु को व कुल मालिक समझता है। जो वो सतगुरु के गुण गा रहा है वो कुल मालिक के गुण समझ कर गाता है। तब सिख उभर सकता है बरना सिख गिरेगा। कैसे गिरेगा मैं आप को एक राज और भेद की बात कहा हूँ। हमारी जो सुरत है इस में हर किस्म के बोध-भान हैं। शारीरिक, मानसिक चेतनताएँ आत्मिक चेतनताएं और सुरत की चेतनताएँ यह सब की सब इस सुरत में मौजूद हैं। अगर आप सतगुरु को श्रद्धांजली भेंट करते हुये उपमा देवी देवताओं के गुणों से देंगे पंडित फकीर चन्द्र जी महाराज के गुणों के साथ उपमा देगे जो १८ रेलवे मंडी के रहने वाले थे, जो पंडित भरत राम जी के घर पैदा हुए या जिन्होने मानवता मन्दिर बनाया था अन्य अपने साँसारिक काम किये तो आप गिरेंगे और अगर गुणों को कुल मालिक के गुण समझते हुए उपमा देंगे, तो आप उभरेंगे। सिख तब उभर सकता है जब हरि के गुण गाएगा। इस का भाव यह है कि सतगुरु को मालिक समझ कर उस के गुण गाना है। हजूर दाता दयाल महर्षि शिव व्रत लाल जी महाराज का भी का एक शब्द है।

गुणातीत गुण अगुण स्वरुपम
अविनाशी राधास्वामी

निराकार साकार अनूपम सुखरासी राधास्वामी तो दाता दयाल जी महाराज ने कहीं भी हजूर राय सालिगराम साहिब का नाम नहीं लिया बल्कि सतगुरु को गुणातीत कहा है तथा गुण और अगुण स्वरुप कहा है। सतगुरु गुण और अगुण स्वरुप होता है मगर उस के गुण हमने गुणातीत के समझने हैं। वास्तव में वो अविनाशी है, गुणातीत है। तो इस प्रकार से हम अपने सतगुरु की महिमा यानि अपने इष्ट को पूर्ण मान कर गुणों का गान करेंगे तो हम उभर सकते हैं वरना गिरेंगे।

'सहज किया अन्त का मार्ग जो रंग रुप पसारा है'

परम दयाल फकीर चन्द जी अपना वो निज धाम छोड़ कर आए किस लिये आए कि संसार में जो दुखी जीव हैं उनका मार्ग साफ कर दूँ। जहाँ उन्होंने सर्वसाधारण के लिये बाहर की शिक्षा बदली जिस पर आचरण करते हुए हमारा उद्धार हो सकता है। मनुष्य बनो, शिव संकल्पमस्तु घर में शान्ति आदि आदि वहां उन्होंने अपने देश को वापिस जाने के लिये जीवों का अन्तर का मार्ग भी साफ किया जिससे जीव का उभार हो सके। आप सब सज्जन बड़ी बड़ी दूर से आए हैं। आप के चरणों में मैं सविनय प्रार्थना कर रहा हूँ कि हजूर परम दयाल जी महाराज ने इस देह में आकर आप के लिये अन्तर का रास्ता साफ कर दिया ताकि आप को अन्तर में चलने की कोई कठिनाई ना हो।

अब मैं अपने आप से पूछता हूँ, मुन्शीराम ! अगर झूठी बात कह कर चार दिन की जिन्दगी के लिये अपना मान ले जाएगा तो क्या करेगा। आप लोग जो यहाँ श्रद्धांजली देने के लिये इकट्ठे हुए हैं, आप हैं कौन ? आप शेर के बच्चे हैं। जैसे सूरज की किरणें होती हैं ऐसे ही आप उस गुणातीत परम अंश हैं। आप कुछ हासिल करने के लिये आये हैं, आप की सुरतें कुछ चाहती हैं। अगर हेरा फेरी कर के मैं रोचक और भयानक बात करके झूठी मान प्रतिष्ठा लूँगा तो मैं कुष्टी होकर मरुँगा और आगे मेरे लिये घोर नर्क है। क्यों कि मैं आप की सुरतों को लूट रहा हूँ। क्या तू अपने अन्तर का मार्ग जानता है या अपनी मान प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिये कह रहा है। मैंने हजूर परम दयाल जी महाराज की दया से अंतर का सफर किया है। इतने रंग रूप आते हैं कि आदमी का चलना कठिन हो जाता है। कभी बाहर के गुरु का रूप आ गया, कभी तारे चाँद और सूरज आ गए कभी और रोशनियाँ आ गई। यह सब रंग और रूप हैं यह हमारे रास्ते को रोकते हैं और आगे नहीं जाने देते। यह अन्तर मार्ग रंग रूप से भरा हुआ था। हजूर परम दयाल

जी ने आकर दया की और शिक्षा को बदला और नया ज्ञान दिया कि ए जीव ! जो कुछ भी तेरे अन्तर नजारे आते हैं भाव विचार, संकल्प विकल्प उठते हैं, यह सब माया हैं, हैं नहीं मगर भासते हैं। हजूर परम दयाल महाराज की दया और उन के सतगुरु के काम की बदौलत सब छूट जाते हैं। यह ही सतगुरु की कृपा है। यह नया ज्ञान है जो हजूर परम दयाल जी महाराज संसार के जीवों को दे गए मेरी तुच्छ बुद्धि में यह आया है इस ज्ञान के बिना सभा लोग अधूरे थे। यही आज्ञा हजूर दाता दयाल महर्षि शिवब्रत लाल जी महाराज उनको दे गये थे कि चोला छोड़ने से पहले शिक्षा बदल जाना। तो जहाँ उन्होंने सर्व साधारण के लिये बाहर की शिक्षा बदली वहाँ अन्तर का मार्ग सहज और सरल कर दिया।

'मुश्किल घाटी अड़बड़ चलना दया से किया सुखारा है'। अभ्यास के समय यह सब मुशकिल घाटिएं बज्र किवाड़ खिड़कियाँ अरगें, रंग रूपों के अलावा आती है। मगर हजूर परम दयाल जी महाराज की दया से मेरे लिये रूकावट नहीं हैं। सार वचन में भी आता है स्वामी जी महाराज भी फरमाते हैं।

'गुरु बिन इस राह न चलना
विघ्न अनेकन मार्ग आना।

इसलिये मैं हाथ जोड़कर आप से अपना अनुभव ब्यान करता हूँ कि ए इन्सान। तुझमें इतनी शक्ति नहीं कि तू इन मंजिलों इन मुश्किल घाटियों को तय कर सके, यह काम सतगुरु का है। मगर इससे पहले बाहर के सतगुरु की भक्ति लाजमी है। देखो बड़े बड़े सन्तों ने सतगुरु से प्रार्थना की है।

'हे राधास्वमी सतगुरु दयारा
गत तुम्हरी अति अगम अपारा
मोहिं निरबल को लीन उबारा

बड़े बड़े सन्तों ने नम्रता के साथ सतगुरु से प्रार्थना की।

तो हजूर परम दयाल जी महाराज ने आकर मंजिलों की सब मुशकलात सच्चे जिज्ञासुओं के लिये साफ कर दी। जो शिक्षा वो बदल गये हैं उस शिक्षा को धारण करने से कोई विघ्न सामने नहीं आता।

आज मैं बडे हौसले से कह सकता हूँ कि महाराज जी ने शिक्षा बदल कर दुनियाँ के जीवों पर बहुत दया की। यह जो मंजिलों की मुशकिल मुशकिल घाटिएं तै कराना है यह सन्त सतगुरु की दया और उस का काम है। यह जो अपनी पुस्तकें लिख गये टेप रिकार्ड भर गए इससे भी लोगों को काफी लाभ हो सकता है। जो पढ़ेंगे उनको लाभ हो सकता है।

'मानुष गुरु अन्त ले जाता, गुरुओं ने यह भ्रम डारा है'

सबसे बड़ी रुकावट जो सच्चे अधिकारियों को अपने देश जाने में है कि कई गुरुओं ने यह संस्कार दे दिया कि बाहर का गुरु जिस का इन्सानी रूप है वो अन्त समय ले जाता है। यह बड़ी भारी रुकावट है, गुरुओं ने भी समय के अनुसार ऐसा क्यों कहा यह उनको पता होगा। इस भ्रम को दूर करने के लिये हजूर परम दयाल जी ने अपनी सारी जिन्दगी खो दी और फरमाया करते थे कि जब मैं जीवित किसी के अन्तर नहीं जाता बहुत लोगो के अन्तर मरते-समय मेरा रूप प्रकट हुआ और मुझे कोई जानकारी नहीं इस लिये साबत हुआ कि कोई भी बाहर का गुरु अपने शिष्य को अन्त समय लेने नहीं जाता।

'उन्होंने ने उसको यम बताया, ज्ञान गुरु रखवारा है'

उन्होंने आकर बताया कि वो अन्त समय बाहर का गुरु तुम को ले जाता है तुम्हारा ही मन है अर्थात यम है। हजूर अपने सत्संगों में बताया करते थे कि मैं मानता हूं कि गुरु अन्त समय जीव की सहायता करता है मगर वो बाहर का इन्सान नहीं: गुरु ज्ञान का नाम है वो अन्त समय हमारी सहायता करता है, जो चैतन्य स्वरुपहै ।

तो में आपको बता रहा हूं कि जो खास काम उन्होंने आकर किया और जीवों पर दया की, जिसके लिए संसार के जीवों की ओर से मैं उनके चरण-कमलों में श्रद्धांजलि भेंट कर रहा हूँ।

'जग में आकर गुरु चिताए, गुरु बनाना व्यवहारा है।' हजूर जब दिल्ली में आल-इण्डिया रिलिजस कांनफ्रेंस पर जाया करते थे तो अपना भाषण शुरु करने से पहले जनता की ओर से पीठ कर लेते थे और गुरुओं को संबोधित करते थे—आप पहले अपना जीवन अमली बनाएं, तब आम जनता आप से लाभ उठायेगी। आप जितने सन्त महात्मा अलग-अलग धर्मों और मतों के हैं एक मंच पर आयें और जो निर्णय करें, वो लोगों को बतायें। वो मंच मानव-धर्म का हो सकता है

'आप थे वे कर्म से बचने, उल्टा किया पसारा है।' आप हैरान होंगे कि १९८१ में जो उन्होंने सत्संग दिए, बहुत नई-नई बातें अपने अनुभव की कह गए। अपने अंतिम सत्संग मैं जो उन्होंने अमरीका अस्पताल में दिया, उसमें फरमाया कि अगर मुझे पहले पता लग जाता कि गुरू बनने का यह परिणाम होता है तो मैं आजसे बीस वर्ष पहले गुरु वाई छोड़ देता। एक सत्संग में उन्होने फरमाया कि यदि किसी ने गुरु बन कर अपना चेला बनाया है, नाम दान दिया है अगर चेला अपनी जिंदगी मैं पार नहीं हुआ, तो गुरु भी पार नहीं हो सकता। यह गुरु चेले होने का एक व्यवहार है। स्वामी जी महाराज ने भी लिखा है :—

गुरु चेला व्यवहार, जगत में झूठा वरत रहा

फिर हम करें क्या। गुरू चेले का काम अगर खत्म हो जाए तो जीवो का उद्धार कैसे हो, तो वो बता गये कि

१. तुम किसी से प्यार मत करो। दूसरा कोई अपना प्यार लेकर आता है तो उसके प्यार का जवाब दो।

२. गुरु मत बनो, बल्कि गुरु का काम करो। यह इतनी ऊँची शिक्षा

है कि समझना मुशकिल है।

मैं आपको सच कहता हूं कि मैं आप अभी अधूरा हूं। यदि मौज को मन्जूर हुआ तो उस सार शिक्षा की व्याख्या मरने से पहले मुझसे करा लेगी।

हम सत्गुरू की दया के बिना इन बातों को नहीं समझ सकते। दाता दयाल जी महाराज ने भी सत्गुरु की महिमा गाई हैं

ए मुकद्दस सत्गुरु, नूरानी यजदानी है तु
नूर का है देवता, रूहानी हक्कानी है तू
हादीये राहे हकीकत, रास्तो से बाखबर
रहनुमा सच्चा है तू, रख हमको धर्म की राह पर
तू उधर ले जिधर, राहत मिले फरहत मिले
दूर रख उस राह से, जिस राह में कुलफत मिले
पाप का टेढ़ा है रस्ता, उससे हमको दूर रख
धर्म के रस्ते को रौशन, करके छल पुरनूर रख
हम सनाख्वां होंगे, मद्हत सरा होंगे सभी
होके ममनूने करम, इज्जत करेंगे जीते जी

छब मक हम पर सन्त सत्गुरु की दया नहीं होती- तब तक यह कठिन हैं जब दया हो जाती है तो बेड़ा पार है। मैं अपने आप से पूछता हूं कि तुमने कुछ किया, कोई सुमिरन ध्यान भजन किया? नहीं। १९८१ की बैसाखी पर हजूर परम दयाल जी महाराज ने मेरा नाम मशहूर कर दिया कि यह अभ्यास करायेगा। इसके साथ बैठकर अभ्यास किया करो। लोग मेरे पास आने लगे। मुझे तो कुछ आता नही था। एक दिन वो अपने कमरे में अकेले बैठे थे। मौका देखकर मैं अन्दर चला गया। जाकर अर्ज की महाराज लोग मेरे पास आते हैं, आप मुझे हिदायत करें कि क्या नाम दूं और क्या अभ्यास कराऊं। आपने ती कोई नाम बताया नहीं। न राधास्वमी नाम, नपांच नाम। फरमाने लगे कि अभी तुम नाम माला बता

दिया करो। नाभी से लेकर आंखों के ऊपर तक रा-धा-स्वा,मी। इसको नाम माला कहते हैं। मैंने कहा बहुत अच्छा।

'फकीर नमाने उनकी शिक्षा सार सार का सारा है।
जानेगा कोई सत्गुरु प्यारा, तन मन आपा वारा है॥'

फकीर इस लिए कि मैं जो कुछ कहता हूं, इसमें मेरा कुछ नहीं। यह उनका ही बखशा हुआ ज्ञान है। वो विलक्षण फकीर थे। अपने दास कों दया करके फकीरी का संस्कार दे गये। कौन सी फकीरी - जो इज्जत और मान से रहित हो। उनकी शिक्षा जो थी वो सार की सार थी, जो संसार के अधिकारी जीवों के लिए लाए थे। सब के लिए एक शिक्षा नहीं थी। हर एक की प्रकृति के अनुसार उसे हिदायत करते थे जो कुछ उन्होंने दया करके अपने दास को बताया, वो मैं बताता रहता हूं। तो सबसे पहले सत्गुरु की भगति जरूरी है। जब बाहर के सत्गुरु की भगति पूरी हो जाती है तो फिर अन्तर मुखी होना सहज हो जाता है।

सबको राधा स्वामी

—×—

स्वर्ग व नर्क

लेखक=कुवेर नाथ श्री वास्तव

बाल्य अवस्था में जब से सचेत हुआ स्वर्ग व नर्क के शब्दों की भनक कान में पड़ने लगी प्रौढ़ होन पर जब स्कूल में गया तो उर्दू पुस्तक से वहिश्त व दो जख का ज्ञान प्राप्त हुआ। जिसमें यह समझा कि वाहश्त में सुख व दोजख में दुख है। मगर स्वर्ग व नर्क या वहिश्त व दोजख कहाँ है इ सका पता नहीं पा सका जब अंग्रेजी पढ़ने लगा तो इनको Heaven and Nell में पाया **Heaven** आकाश स्वर्ग का पृथ्वी नर्क है--हमारी समझ में यह बात आई कि आकाश स्वर्ग का पृथ्वी नर्क है—इसका प्रमाण खोजने लगा तो देखा कि

हिन्दू, मुसलमान, ईसाई तथा अन्य पंथ वो सम्प्रदा के अनुयाई अपनी -अपनी समझ के अनुसार भव पूजा पाठ, रोजा निमाज, प्रार्थना या अन्य कोई कार्य अपने पंथ वो संप्रदाय के अनुसार भव समाप्त कर लेते हैं तो अपनी दृष्टि आकाश को ओर ऊपर करके दोनों हाथ उठा कर धरती छोड़ने वो आकाश में प्रवेश करने का संकेत करते हैं मुझ को इस बात का प्रमाण मिल गया कि आकाश स्वर्ग है और पृथ्वी रक है—यहाँ दुख ही दुख है अगर कुछ सुख का भान होता है तो तो वह भी समयानुसार दुख का रूप धारण कर लेता है तभी तो सब लोग पृथ्वी को त्यागने वो आकाश में प्रवेश करने हेतु यह सब कुछ किसी न किसी रूप में कर रहे हैं जब उनके कार्य की अवधि पूरी हो जातो है वह संसार को त्याग देते हैं और आकाश में चले जाते हैं भले ही वह अपने कार्य कुछ और समझते हैं—

मैं त्रस बात के खोज में पड़ गया कि आकाश वो पृथ्वी को प्रगट करने वाली कौन शक्ति है और किस नियम के आधार पर प्रगट करती है—आज तक हमारी खोज का परिणाम यही निकला कि इस श्रष्टि को प्रगट करने वाली एक सर्व श्रेष्ट महान आकर्षण शक्ति है उसका कोई रूप-रंग वो रखा नहीं है इस लिए उसको अलख, अगम व अनाथ कहते हैं—और वह शक्ति इस श्रृष्टि को किस नियम के आधार पर रचती हैं यह बात हमको रहस्य रही —रहस्य तो रहस्य ही है वह गुप्त रहे तभी ठीक है अगर प्रगट हो गया तो रहस्य कहाँ रहा उसको मर्यादा खो गई और महानता रही—हमको सिवाय इसको मालिक की मौज समझ कर मोन रहने के दूसरा चारा नहीं है—

परम दयाल प० फकीर चन्द जी महाराज अपने जीवन काल में इस रहस्य को संकेत द्वारा हमको समझाने का प्रयास करते रहे— मुझमें इतनी क्षमता नहीं थी कि मैं इसको समझ सकूं मगर इसको

समझने को ओर आकर्षित रहा और क्षमता बढ़ती गई--बहारी क्षमता की निरख परख करते रहे—जब उनको यह अनुभव हो गया कि उनकी दृष्टि कोण में मैं इसके समझने योग्य हो गया तो अपने चोला छोड़ने के निकट काल एक पत्र हमको लिख कर, हमको समझा कर ओर आरूढ़ करा करा कर चलते बने जो हमारे जीवन में उनकी जगह पथ प्रदर्शक है—वह पत्र मानव मन्दिर पत्रिका मार्च सन १९८१ ई० में प्रकाशित करा दिया—जिसमें और बातो के अतिरिक्त वह मुझको आशीर्वाद देते हुये लिखते हैं—"कुवेर मैं अब चल रहा हूँ मालिक की मौज मर रहना-मरने के बाद मनुष्य की आत्मा कहाँ जाती हैं पता नहीं"—

वह कहा करते थे कि अगर प्रकृति ने मुझे यह शक्ति प्रदान किया तो मैं मर कर जहाँ-जहाँ पहुँचूँगा उसको वर्णन कर जाऊँगा=एक बार दर्शन हेतु मैं जब उनके दरबार में होशियार पूर हाजिर हुआ ती जबकि दो चार सतसंगी भाई मौजूद थे इसका जिक्र छेड़ते हुए मुझको आकर्षित किया—मैं अर्ज किया महाराज हमारे अनुभव में यह संभव नहीं है—कहना सुनना द्वविन्द अवस्था में होता है आप तो निद्वीवन्द अवस्था में चोला छोड़ेंगे वहाँ कहने का सामान कहाँ है ? तो वह खामोश हो गये—दाता दयाल साहब वो परम दयाल साहब में दो बातें विचित्र थी—प्रथम यह कि उनको छोटी से छोटी बातों का भी समरण रहता था—द्वतिय यह कि वह लोग मुझको जो आदेश देते थे उनका आशय क्या है उनको आज्ञा का पालन करने के वर्षों बाद समझ पाता था या नहीं भी समझ पाया आज तक—हां इतना अवश्य लिखता हूँ कि इन दोनों महा पुर्षो के आदेश का पालन करना हमको औषधि का काम करके शान्ति प्रदान कर रहा हैं—यह उस रोग की औषधि हैं कि जिसका मुझे पता नहीं था और उसके पिडा में आनन्द ले रहा था—इन लोगों का कोई आदेश बुद्धि के आधार पर नहीं होता—इनको सामरण नहीं रहता कि इन लोगो ने किसी को क्या कहा—प्रकृति की जो मौज होती है उनसे बहलबाती वो बराती है मैं इनसे बात चीत करने में कतराता था—दूर ही रहना पसन्द करता था—अगर उनके समीप जाता तो बहत सतर्क

रहता था । पता नही वह क्या आदेश देवें जिसको मुझे पालन करना पड़े । मगर इसके बावजूद भी उनकी इच्छा शक्ति इतनी प्रवल थीं कि जो चाहते थे हम से करा ही लेते थे ।

मरने के बाद मनुष्य की आत्मा कहां जातो है इसका पता नहीं है । यह हमारे उपरोक्त प्रश्न का उत्तर है जो हमारे अनुभव का समर्थन करती है कि श्रष्टी की रचना का रहस्य गुप्त है इसको मैं निम्नआंकित से अधिक नहीं कह सकता ।

सर्व श्रेष्ठ आकषण शक्ति या सर्वाधार की मौज हुई उसमें गती आई वह शब्द के रूप में प्रगट हुई । अपने को प्रगट करने यानी श्रष्टि की रचना हेतु प्रकाश व्यापक हुआ और आकाश का रूप धारण कर लिया जहाँ दुख क्लेश का भान नहीं हैं इसको स्वर्ग कहते है । आकाश विम्व बन गया इस के प्रतिविम्व से प्रथक कैसे तह सकता है वह इसका साथ देने लगा और स्वर्ग से नर्क बन गया ज्यों ज्यो शब्द व प्रकाश आकाश को छोड़कर नीचे पृथ्वी की ओर आता गया उसकी निद्वीविन्द अवस्था छिन्न होती गई और द्वविन्द की मात्रा जोर पकड़ती गई स्वर्ग की मात्रा घटती और नर्क की मात्रा बढ़ती गई देखो तुम महा कारण के परे के मंडल से महा कारण के मंडल मैं आये महा कारण के मंडल से कारण के मंडल में आये कारण मंडल से सूक्ष्म मंडल में आये और सूक्ष्म मंडल से स्थूल मंडल में अपने को पिंडज, अंडज, उखमज वास्थावर के रूप में प्रगट किया। तुम्हारे स्वयं ने अपने को मनुष्य के रूप में प्रगट किया और संसार बन गया । यहां दुख तो दुख ही है अगर तुम कुछ सुख का भान करते हो तो समयानुसार को भो दुख में परिवर्तित पाने लगे इससे छूटने के हेतु जाने या अनजाने कार्य करने गगे ।

जो वस्तु जिस भंडार से प्रगट होती है उसी में प्रवेश करने पर ही शांति पाती है सूरज की किरण जब सूरज में समाकर लोप हो जाती है तब शान्ति पाती है नदी का जल बहते बहते जब समुद्र में

समा जाता है तब शान्ति हो जाता है। सूरज की किरण व अपने अपने भंडार में प्रवेश करके अपनी अस्तित्वत भेंट करके द्वविन्द से निद्वीविन्द होकर अलख, अगम व अनाम हो गये। अब वह लखे नहीं जा सकते और उनकी गम व सुध बुध नहीं रही इस कारण उन का नाम नहीं रखा जा सकता। वह अनाम हो गये। इसको राधा-स्वामी कहते हैं स्वामी जी महाराज इसका समर्थन इस प्रकार करते हैं। जहाँ मिलौनी तहाँ विचार एक एक में कहाँ विचार जब तक मिलौनी या द्वविन्द अवस्था प्राप्त हो गई तब भेद भाव जाता रहा इसी प्रकार तुम जहां से आये हो वही जाकर शान्ति प्राप्त करोगे इस का समर्थन निम्नाआँकित नज्म से होता है।

लौव शौले की सुव आत्मा है, पानी तहे खाक को खा है।

आग आकाश से प्रगट होती है। इस कारण प्राकृतिक रूप से उसकी लपट आकाश की ओर जाती है। पानी पृथ्वी के नीचे से निकलता है इस वजह से उसकी धार नीचे बहता है। दुनिया के दुख रूपी नर्क से छुटकारा पाने हेतु तुमने शादी किया। संतान उत्पन्न किये। माता पिता, भाई, बन्धू कुटम्ब व परिवार के बंधन में फंस कर इसको सब कुछ समझ बैठे जहां से आये थे उसको उसी तरह भूल गये जैसे रात में तुमको दिन का ध्यान नहीं रहता तुम इसमें ऐसा जकड़ गये जैसे रेशम का कीड़ा अपने खोखले में जकड़ जाता है तुम्हारा दम घुटने लगा। चाहे तुमको अभी तक इसका अनुभव हुआ हो या नही हुआ हो यह निश्चित बात है कि जो कुछ भी कार्य तुम किसी रूप में करते हो वह पृथ्वी को छोडने व आकाश में प्रवेश करने हेतु करते हो और जब तुम्हारे कार्य की सीमा समाप्त हो जाती है तुम पृथ्वी को छोडकर आकाश में प्रवेश कर जाते हो इसको तुम स्थूल माया मंडल से आरम्भ करते हो स्वयं व परिवार से पिन्ड छुड़ाने के लिये पहले उनके पालन पोषण हेतु स्थूल कार्य करते हो। कोई खेती गृहस्थो करता है कोई व्यापार

करता है कोई नौकरी करता है, कोई भीख मांगता है, और कोई चोरी चकारी करके अपना व कुटुम्ब का पेट पालता है इससे किसी सीमा तक दुख से छुटकारा और सुख की प्राप्ति होती है और स्थूल माया की दशा सूक्ष्म होने लगती है। यह शरीर का मंडल और शारीरिक बन्धन व स्थूल माया के हल्के होते ही तुम मन के बंधन व सूक्ष्म माया के प्रकोप में फंस जाते हो। और काम, क्रोध, लोभ मोह व मान बडाई के चंगुल में आ जाते हो यह मन का मंडल है इनको भोगते २ कुछ दिनों में तुम को इनसे उदासीनता आ जाता है। तुम इनसे मुंह फेर लेते हो। किसी ने तुम्हारा मान किया तो क्या और अपमान किया तो क्या तुममें समता आ गई। तुमको यह प्रतीत होने लगा कि जो कोई तुम्हारा मान या अपमान करता ह वह तुम्हारा मान या अपमान नहीं करता बल्कि अपना करता है। मान व अपमान उस व्यक्ति से वैसे ही निकलते हैं जैसे सूरज से किरन निकल कर उसी में समा जाती है।

पहले तुमने स्थूल माया से नाता जोड़ा। इसको भोग कर तृप्त हो गये और छोड़ दिया। बाद में सूक्ष्म माया के मंडल में प्रवेश किया और उसमें भी संतुष्ट हो गये। तुमको अपने निज घर का मार्ग नहीं मिला। इसकी खोज में तुमने किसी निष्काम संत सतगुरु की ओट ली उनसे प्रेम का नाता जोड़ा सच्चे होकर उनके आदेश का पालन किया उनका संस्कार तुम में प्रवेश कर गया और तुम में शब्द व प्रकाश प्रगट हो गया। तुम किरण माया के देश में आ गये स्थूल माया त्रियगुणात्मक थी उसमें प्रसन्नता था सूक्ष्म माया में द्वविन्द भाव था उसमें आनन्द था किरण माया में एकत्व है यहाँ तुमको शान्ति है। किरण माया जो शब्द व प्रकाश है मैं यद्यपि शान्ति है मगर शान्ति का भान है यहां आकर तुम बहुत कुछ पा गये मगर सब कुछ नहीं पाया शान्ति होने के कारण तुमने कुछ दिनों में यहाँ विश्राम किया और सो गये मगर सूक्ष्म

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

अशान्ति ने तुम्हें जगा दिया। इस जगह विश्राम करने से तुम में आगे बढ़ने की शक्ति आ गई तुमने शब्द व प्रकाश का भी त्याग किया और महा कारण देश में आये जहां शान्ति को त्याग कर मौनता प्राप्त कर ली और द्वविन्द को छोड़कर निद्वविन्द अवस्था प्राप्त करली मगर बात तो तब है जब मौनता का भी भान न रहे दाता दयाल साहेब इसका समर्थन अपने निम्नांआंकित नज्म में इस प्रकार करते हैं।

१ नूर[1] के पुतले तू दिल को नूर का मखजन[2] बना।
तिराबो[8] तारीक[3] दिल को जल्द तू रोशन बना।

२ खोद कर लाल वो जवाहर इल्म के हर सुवखेर,।
तेरा सिना सर्र[1] हक का है अगर मादन[2] बना॥

३ किसको सिज्दा[4] कर रहा है सोच तू दिल में जरा।
कल जो मसजुदे[5] मलायक था आज वह शैता बना॥

४ ऐ हुमों सीरत[6] बशर तेरी गजा कुछ और है।
लाशे हवा को. न अपने पेट का मदफन[7] बना॥

५ छोड़ आया अपना घर मुद्दत हुई वीरान[8] है।
अब तू वापस चल अदम[9] को खुशनुमा गुलशन बना॥

६ हक नुमा, सुरत, नुमा, जिलवा नुमा दिलदार है।
दिल के पर्दों को तू शक[1] करके इन्हें रोजन[11] बना॥

७ जवबे से "जावित" ने खुद को कर लिया मजबूत जब।
दशे[12] गाहे ज्वत का उस्ताद इल्म वो फनवना॥

१- प्रकाश, २- खजाना, ३- अन्धेरा ४- (१- ईश्वर का रहस्य २- खान) ४- पूजा, ५- देवताओं का पूज्य ६- मनुष्य ७- कब्र ८- सुनसान ९- स्वर्ग १०-चीरकर ११- झरोखा १२- पाटशाला।

स्वर्ग व नर्क का विषय कुछ ऐसा है जो कहने सुनने से न्यारा है केवल सैन बैन द्वारा स्वोत किया जा सकता है इसीलिये स्वामी जी महाराज कहते हैं:—

यह करनी का भेद नाहीं बुद्धि विचार,
कथनी छोड़ करनी करे तब पावे कुछ सार।

स्वर्ग क्या नर्क क्या है इसका पता तो तुम भली भाँति पा गये रहा नर्क से निकलने व स्वर्ग में प्रवेश करने का प्रश्न इसके हेतु किसी ऐसे पुरुष की खोज करो जो नर्क के द्वविन्द से निकल कर स्वर्ग के निद्वविन्द में प्रवेश करके निष्काम हो गया हो जिसका स्वयं नीज स्वयं में लीन हा गया हो और जिसका वास्तविक प्रसन्नता प्राप्त हो गई हो मार्ग का पता बताना किसी और का काम है उस पर चलकर लक्ष पर पहुँचना तुम्हारा काम है। वायुयान का चालक लाख चतुर हो अगर मशीन खराब है तो कैसे उडेगी। गुरुदेव अपने निज दया से तुमको इतनी शक्ति देवे कि तुम स्वर्ग का सुख भोगे।

राधास्वामी

—×—

दीपावली के शुभ अवसर पर हम अपने सभी सतसंगी भाइयों को अपनी शुभ कामनायें अर्पित करते हैं।

सम्पादक

संपत्ति की मृग-तृष्णा

संपति से अधिक कोई पदार्थ मनुष्य को मुग्ध करने वाला नहीं है। यह वह भयंकर मरुस्थल है जो बिना प्राण लिये हुये मनुष्य का पीछा नहीं छोड़ता। यदि धन से केवल देन लेन और गृह व्यवहार का काम लिया जाय तो सम्पत्ति इतनी दुखदाई नहीं होती परन्तु यदि उसी को सब कुछ समझ लिया जाय और वही जीवन का उद्देश्य बन जाय तो इस से घृणित संसार में कोई अवस्था नहीं है। यह नहीं कहा जाता है कि तुम धन सम्पत्ति न प्राप्त न करो और उसके प्राप्त का साधन न करो। अवश्य धन कमाओ बिना धन के संसार के कारोबार नहीं चलते। इस दृष्टि से सम्पत्ति बड़ी आवश्यक वस्तु है परन्तु उसको अपने बन्धन का कारण क्यों बनाते हो। उसके रूप को जानो। अपने रूप को पहिचानो। सम्पत्ति तुम्हारे लिये है तुम सम्पत्ति के लिये नहीं हो और यदि ऐसी समझ से तुम धनाड्य हो तो तुम धन से अपना और दूसरों का उपकार कर सकते हो और यदि सम्पत्ति केवल घर में रखने के लिये है तो वह घृणित और उपद्रव की वस्तु है। जीते जी तो उसके उलझन में स्वयं पड़े ही रहोगे, तुम्हारे पीछे जो उसके उत्तराधिकारी होंगे उनको भी लड़ाई झगड़े से काम रहेगा।

बहुत कम मनुष्य संसार में मिलेंगे जो सम्पत्ति का उचित व्यवहार करते होंगे वरन् सौ में निन्यानवे तो ऐसे हैं जो उसके कारण नष्ट ही हो जाते हैं और जीवन के आनन्द से अपने आपको बंचित कर लेते हैं।

कहते हैं आगरा के किसी मुहल्ला में एक बनिया रहता था। उसके पास बड़ी सम्पत्ति थी, किन्तु वह दुखी था। उसके पास ही एक मुन्शी का घर था। जिसकी दीवार बनिये की दीवार से मिली हुई थी। बनिये का घर तो शोक गृह था परन्तु मुन्शी खूब रंग

रलियाँ बनाया करता था। बनियाइन ने अपने पति से पूछा—यह क्या कारण है ? यद्यपि हमारे इतना धन द्रव है परन्तु यहाँ सुख नहीं; परन्तु यह निर्धन प्रसन्न रहता है और जब देखो प्रसन्नता की बातें सुनाई देती हैं।, वह बोला--'अब तक यह ९९ के फेर में नहीं आया।' उसने कहा ९९ का फेर क्या है ? उत्तर मिला—मैं तुमको इसका तमाशा अभी दिखाता हूँ।' यह कह कर बनिया ने एक चिथड़े में ९९ रुपया बांधा और जब मुन्शी कचेहरी गया हुआ था चुपके से खिड़की द्वारा उसके मकान में फेंक दिया।' मुन्शी जब लौट कर आया पोटली पर दृष्टि पड़ी। खोला तो ९९ रुपये मिल गये। बहुत प्रसन्न हुये। प्रतिदिन का उसका नित्य नियम था कि कुछ न कुछ बाजार से खाने पीने की सामग्री मोल लाया करत था। आज रुपया देखकर विचार करने लगा यह केवल ९९ हैं। एक ही रुपया पास है चलो इस में मिला दो जिससे यह सौ पूरे हो जाँय और उस दिन बेचारा भूखा ही सो रहा। हँसी खुशी रँग रलियाँ सारी बातें भूल गया। बनियाइन ने कहा—'आज मुन्शी जी गाते बजाते नहीं ?' बनिया बोला --'९९ के फेर में पड़गया।' दूसरे दिन जो आमदनी हुई मुन्शी ने अधिकाँश पोटली के भेंट की। केवल साधारण भोजन से काम निकाला और उसके आनन्द की सारी चेष्ठा हरण हो गई और वह अपने पडौसी बनिये के सदृश्य हो गया। जैसे मरु-स्थल को देखकर प्यासा मृग जल के लालच में चला जाता है और अन्त में बहुत दूर पहुँच कर पानी न पाकर थकावट से जान देता है, वैसे ही धन का लोभी उसके जाल में फँस कर रुपया के बढ़ाने और जोड़ने में अपने हृदय की सारी शक्ति को अर्पण कर देता है। न उससे उसको आनन्द प्राप्त होता है न तृप्ति होती है। इसी प्रकार इसी धुन में बुरी तरह मर जाता है और कुछ उसको प्राप्त नहीं होता।

जो मनुष्य संपत्ति को संपत्ति की दृष्टि से कमाता है वह अभागा

है। जो अपनी आवश्यकता और काम काज के लिये कमाता है वह भाग्यवान है। इस में वह जादू है कि इसका मारा हुआ कभी नहीं जी सकता। तड़प-तड़प कर प्राण त्याग करता है और सम्पत्ति गले का हार बनी हुई उसके लिये फाँसी हो जाती है।

खा ले खर्च खिला ले, कर ले अपना काम।
चलती बिरियाँ रे नरा, संग न चले छदाम॥
गाँठी होय सो हाथ कर, हाथ होय देह।
आगे हाट न बनिया, लेना होय सो लेह॥

सिकन्दर ने संसार को विजय किया। अनन्त धन प्राप्त किया। जब अफरीका के बादशाह के राज्य में पहुँचा, उसको भोजन का निमंत्रण दिया गया। जब थाल के ऊपर से कपड़ा हटाया गया उस में भोजन के बदले सोने चांदी के सेब और नाना प्रकार हीरे जवाहिरात और मोती रक्खे हुये थे। सिकन्दर देख कर दंग हुआ। पूछा—'क्या तुम इन्हे खाते हो?" अफरीका के राजा ने उत्तर दिया—'खाने पीने की सामग्री तो तेरे यहाँ भी है परन्तु तू भी इसके लिये मारा-मारा फिरता है इनको खा।" वह लज्जित हुआ। जब उसकी मृत्यु आई उसने आज्ञा दी कि उसके दोनों हाथ अर्थी के बाहर रहें, जिससे लोग देखें और शिक्षा ग्रहण करें।

मुट्ठी बाँधे आया बन्दे, खाली हाथ तू जावेगा।
धन दौलत और हाथी घोड़ा, कोई काम न आवेगा॥

मुट्ठी बाँधकर आने का आशय यह है कि मनुष्य कुछ न कुछ परमार्थिक संस्कार चला लाता है, परन्तु यह ९९ का फेर ऐसा है कि सब कुछ नष्ट करके खाली हाथ रोता हुआ जाता है सम्पत्ति की तृष्णा मनुष्य को बुरी तरह मार देती है और वह चिन्ता में पड़ा रहता है।

यह तो तुमने सुन लिया कि सम्पत्ति से तृष्णा बढ़ती है। सौ के पश्चात हजार, हजार के पश्चात लाख, लाख के पश्चात करोड़ की

इच्छा बनी रहती है। तृप्ति कदापि नहीं होती। दूसरी बात यह है कि इस प्रकार के मनुष्य दो प्रकार के दुखों में ग्रसित हो जाते हैं। एक तो वह लोभ के कारण उसको भोग नहीं सकते। दूसरे भयभीत रहते हैं। कि कहीं कोई छीन ले जाय। चोर का डर, हाकिम का डर, भाई बन्द का डर, पुलिस का डर।

सहस्त्रों यत्न उसको रक्षा के लिये करने पड़ते हैं, मनुष्यत्व को खो देना होता है और सम्पत्ति की मृग-तृष्णा का मारा हुआ मनुष्य इतना नीचे गिर जाता है कि फिर उसके उभरने की कोई आशा नहीं रह जाती इस लिये जो मनुष्य कहते हैं कि कारूँ अपने खजाने सहित धरती में गढ़ गया वह बहुत सच कहते हैं।

यह न समझो कि यह सम्पत्ति केवल दुनियादारों को ही छलती है। प्रायः नाम के साधू सन्यासी भी ऐसे मारे जाते हैं कि उनकी दशा दुनियादारों से भी निकृष्ट हो जाती है। यह बेचारे कौड़ी-कौड़ी माया जोड़ते हैं, अन्य में औरों के लिये छोड़ जाते हैं। इनसे कोई पूछे तो सही मूर्खो! तुमको किसने सम्पत्ति दी थी कि घरबार छोड़ो। घर में रह कर काम करते तो इससे फिर भी अच्छा था।

आजकल की सभ्यता का धर्म सम्पत्ति आराधना है जिसका इष्ट रुपया है। हमारे देश का तो कहना ही क्या है। यूरुप अमेरिका के करोड़पती जिस भाँति अशान्त और दुखी हैं हम से न पूछो उनकी अवस्था कहने योग्य नहीं है। साराँश यदि मनुष्य धन सम्पत्ति के असली रूप को समझ कर उसका यथेष्ठा प्रयोग नहीं करता और उसके लोभ में रात दिन पड़ा रहता है, वह कुत्तों की मौत मरता है, किन्तु कुत्तों से अधिक निकृष्ट मृत्यु पाता है और यही कारण है कि सब सम्पत्ति का भयानक मृग-तृष्ण से बचने के लिये सूचित करते रहते हैं।

सम्पत्ति के मारे हुये की क्या दशा होती है, वह तुमको महमूद गजनवी के बृतान्त सुनने से ज्ञात होगी और इसलिये हम यहाँ उसके

जीवन के संक्षिप्त चरित्र सुनाते हैं।

महमूद गजनवी का वृतान्त

महमूद गजनवी सुबुक्तगीन का पुत्र था और ९६७ ई० में पैदा हुआ था। बचपन ही से यह वीर और साहसी था। प्रत्येक संग्राम में पिता के संग जाता था और प्राय इस साहस व शूरवीरता से काम करता था कि सेनापति चकित रह जाते थे। यह बाप के मरते समय नीशापुर का सरदार था। इसकी योग्यता का कोई मनुष्य सुबुक्तगीन के सम्बन्धियों में नहीं था। पिता के मृत्यु के समय इसकी आयु ३० बर्ष की थी। इसमें है जहाँ बहुत से गुण थे साथ ही अवगुण भी अनेकों थे और इन्हीं में से एक घृणित अवगुण यह था कि धन द्रव का अत्यन्त लोभी था।

सुबुक्तगीन के मरने पर महमूद का छोटा भाई इसमाइल राज सिंहासन पर बैठा क्योंकि महमूद लौंडी के गर्भ से था परन्तु इसने उस को कैद लिया। बड़ी हत्या-काण्ड के पश्चात गजनी के राज सिंहासन पर स्वयं बैठा। प्रथम सामान्य वंश के संग सम्बन्ध किया परन्तु अन्त में मंसूरसानी (द्वितीय) को अन्धा बना कर अपने आपको स्वतन्त्र होने की घोषणा की और ९९९ ई० में खलीफा बुगदादा की आज्ञा से अपने आप को सुलतान की पदवी से सम्बोधित किया। प्रथम उसने अपने देश की दशा को सुधारा। फिर भारत वर्ष की ओर ध्यान दिया क्योंकि उसने बाल्यावस्था से ही सुन रक्खा था कि भारत सम्पत्ति की खान हैं। मुँह में पानी भर आया था। चतुर राज दूत और भेदा अनेकों भेष से भेजे। हिन्दुओं के निर्बल अंगों का पूर्ण रूप से पता ले लिया। फिर बड़े भयंकर रूप से इस देश पर आक्रमण किया और क्रमशः इस अभागे भारत पर उसके ११ आक्रमण हुये प्रत्येक और आक्रमण में केवल करोड़ों की सम्पत्ति ही नहीं ले गया किन्तु लाखों की संख्या में स्त्री पुरुष व बालकों को लौंडी (दासी) व गुलाम (दासों) की भाँति ले गया और नाम मात्र के

मूल्य पर गजनी के बाजार में बेच दिया। इसका पहिला आक्रमण १००१ ई० में हुआ था जिसमें जयपाल लाहोर का राजा हो गया था। छटे आक्रमण में जो थानेसर के विपक्ष में था १०१० ई० में हुआ। इसमें कई करोड़ रुपये उसके हाथ लगे और दो लाख हिन्दू लोंडी गुलाम बना गये। सन् १०१७ ई० में एक लाख सवार और बीस हजार पैदल लेकर यह कनौज में आया। राजा ने अधीनता स्वीकार की। बहुत कुछ धन-धान्य कर में दिया। कन्नौज से मथुरा में गया, जिसके मन्दिरों को देख कर चकित रह गया। यहाँ उसने हजारों मन्दिरों को नष्ट कर दिया। चाँदी व सोने मूर्तियों को पिघला डाला और वापिस जाकर गजनी में मथुरा के मन्दिर के सदृश्य एक मसजिद बनवाई जिसका नाम उरूसेफलक रक्खा और अपनी राजधानी को सजाया। सबसे अधिक प्रसिद्ध आक्रमण उसका सोमनाथ पर हुआ है। उसकी अवस्था से परिचित होने पश्चात हसन मेमदी ने जिस भांति सुलतान से वर्णन किया है उसके शब्द इस प्रकार हैं—महाराज ! मैंने वहाँ की दशा विचित्र व विलक्षण सुनी है।' कहते हैं—'जिस मन्दिर पर सोमनाथ की मूर्ति पधराई है वहाँ बाहर से प्रकाश नहीं किया जाता। हीरा मणिकादि द्वार व दीवार पर जड़ित हैं और झाड़ फानूस पर लगे हैं। उनकी जगमगाहट से रात्रि व दिन एक समान हैं। बीच में बड़ी भारी सोने की जन्जीर लटकती है उनमें घन्टा बंधा है। पूजन के समय वह बजाया जाता है। दो हजार गाँवों की जागीर की आमदनी उसके खर्च के लिये नियत है। छै सौ कोस की दूरी से गंगाजल लाकर मूर्ति को स्नान कराया जाता है। दो हजार ब्राह्मण उसके पुजारी हैं, पाँच सौ स्त्रियाँ, तीन सौ गवइये भजन गाने के लिये नौकर हैं। मन्दिर माल असबाब इस अधिकता से है कि उसका दशाँश भी किसी बादशाह के खजाने में नहीं समा सकता है।'

फकीर चमन पत्रावली

होशियापुर
१०-११-७२

प्यारे चमन, राधास्वामी,

तुमने अच्छा किया सतसंग का सिलसिला जारी कर लिया। मानवता सन्दिर का ध्यान रखना। यहाँ से किताबें ले जाया करो और यदि कोई खरीदना चाहे तो उस को दे दिया करो। तुम्हारे प्रश्न का उत्तर जबानी देने वाला; और लिखने वाला नहीं हैं!

आपका फकीर

प्यारे दुर्गादास जी राधास्वामी

हुशियार पुर
१७-११-७२

पत्र मिला, मेरी तबीयत ठीक नहीं है, पेशाब की तकलीफ है कभी मेल होगा तो बाकी बातें होंगी। इन्सान के अन्दर सब कुछ भरा हुआ है। साधन और अभ्यास किए जाओ। जाती गर्ज न रखते हुए। तुम्हारा मालिक तुम्हारा सहायक रहेगा! अहंकार में मत आना।

तुम्हार फकीर
हुशियार पुर
१७-११-७२

दुर्गादास जी चमन राधा स्वामी।

पत्र मिला, १७ दिसम्बर ७२ को मासिक सत्संग होगा। इसके बाद शायद मैं सरसों बीड़ी (जिला सहारनपुर) अपने इलाज के लिये चला जऊँ। आप यदि आना चाहो तो १७-१२-७२ तक आ सकते हो।

आपका फकीर

हुशियार पुर
२५-१२-७२

प्यारे दुर्गादास चमन राधा स्वामी।

ज्योतिष का काम खूब करो। पैसे कमाओ इस में कोई पाप नहीं है। सत्संग का काम है। तरीका किसी को बताने में कोई हज नहीं। गुनाह तो गुरू बनने में है। जीव, अज्ञानी है। निबल हैं। सहारे के बिना चल नहीं सकते। मेरी सच्ची इच्छा है कि तुम्हारी हालत ठीक हो जाए।

आपका फकीर
२६-१२-७२

श्री दुर्गादास चमन, राधास्वामी,

तुम्हारे लम्बे चौड़े पत्र आते हैं। मगर जब तुम आओगे फैसला हो जाएगा। अतः पत्र में अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं हैं बजाए किताबों के पढ़ने के अपने अन्दर जाया करो।

आपका फकीर
१३-१-७३

प्यारे दुर्गादास चमन, राधा स्वामी,

जैसी लौ पहले लगी तैसी निभे तोड़
अपनी देह की क्या कहुँ तारे पुरुष करोड़ ॥

—×—

हम अपनी इच्छाओं और कामनाओं की पूर्ति के लिये तो कितने चिन्तित रहते हैं लेकिन कौन है जो ईश्वर की कल्पना करता है और उसके चिन्तन में बैचेन रहता है।

संत कादरी बाबा

"मनुष्य बनो" (हिन्दी मासिक पत्र) समाचार पत्र (केन्द्रीय) अधिनियम १९५६ नियम ८ फार्म ४ के अनुसार आपेक्षित आवश्यक सूचना

१—प्रकाशन का स्थान	:	अलीगढ़
२—प्रकाशन अवधि	:	मासिक
३—मुद्रक का नाम	:	श्रीमती सुधा मीतल
क—राष्ट्रीयता	:	भारतीय
ख—पता	:	शिव भवन, लेखराज नगर, अलीगढ़। उत्तर प्रदेश
४—प्रकाशक का नाम	:	श्रीमती सुधा मीतल
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	शिव भवन, लेखराज नगर अलीगढ़
५—सम्पादक का नाम		श्री श्रीमती सुधा मीतल
राष्ट्रीयता		भारतीय
पता	:	शिव भवन, लेखराज नगर, अलीगढ़
६—स्वत्वाधिकारी	:	श्रीमती सुधा मीतल
संरक्षक	:	परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज

७—मैं सुधा मीतल घोषित करती हूँ कि उपर्युक्त विवरण मेरी जानकारी और विवरण के अनुसार सही है।

दिनांक १५ अक्टूबर, १९७८

सुधा मीतल
प्रकाशक के हस्ताक्षर

Regd. No. L-ALG-28

पुस्तकें

हमारे यहां
महर्षि शिवव्रतलाल जी महाराज
कृत
हिन्दी की आध्यात्मिक, धार्मिक,
स्त्री उपयोगी,
स्वास्थ्य व मनोविज्ञान सम्बन्धी
पुस्तकें तथा 'शाही' और 'मोती'
सिलसिले के उपन्यास तथा
परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज
कृत उच्च कोटि की अमूल्य पुस्तकें
मिलती हैं।
पूरा सूचीपत्र मंगायें।
डाक खर्च सब का अलग है।
पुस्तकें रजिस्टर्ड डाक या रेल से
भेजी जाती हैं।

मिलने का पता :—
कार्यालय
मनुष्य बनो
शिव भवन, लेखराजनगर,
अलीगढ़ (उ० प्र०)

ग्राहक सं० ____
श्री ____

अ० स० सम्पादक — महेशचन्द्र मीतल
सम्पादक
व्यवस्थापक व प्रकाशक—
श्रीमती सुधा मीतल,
शिव भवन, लेखराज नगर
अलीगढ़।

Printed by S. Mittal, Data Dayal Printers, Aligarh